रात्रिक्लास 23/10/68 :– शिवबाबा याद है बच्चों को? सतयुग की बादशाही याद है बच्चों को? 84 जन्म याद है बच्चों को? बाप ने समझाया है ना 84 जन्मों के चक्र का ज्ञान। 84 के चक्र के ज्ञान को समझने तुम स्वदर्शनचक्रधारी विश्व के मालिक बनते हो। इसलिए विष्णु को कोई चक्र नहीं है। तुमको यह ज्ञान है। विष्णु को ज्ञान नहीं है। तुम ब्राह्मणों को ज्ञान है इसलिए तुमको स्वदर्शनचक्रधारी कहा जाता है। यह जानने से ही तुम चक्रवर्ती राजा विश्व का मालिक बनते हो। फिर इस पढ़ाई से ऊँच पद पाना है। जैसे ऊँच पढ़ाई पढ़ते हैं ना। तुम जानते हो यह ऊँच पढ़ाई है नर से नारायण बनने की। इनसे ऊँच कोई पढ़ाई होती ही नहीं। ऊँच ते ऊँच भगवान। वही टीचर बन ऊँच ते ऊँच पढ़ाते हैं। जिससे नई दुनिया की बादशाही मिलती है। तुम जानते हो और सभी पढ़ाइयाँ वर्थ नॉट ऐ पैनी है। उनसे तुम गरीब ही बने हो। बच्चे जान गये हो बहुत साहूकार थे फिर भक्तिमार्ग में शास्त्र आदि पढ़ते–2 नीचे गिरे। सबसे ऊँच पढ़ाई यह है। जिससे विश्व का मालिक बनते हैं। निश्चय है तो और सभी पढ़ाई छोड़ देनी चाहिए। सभी कुछ बेहद के बाप से मिलता है। शिवबाबा के भण्डारे से कितने की परवरिश होती है। तुम्हारी यह पढ़ाई है भविष्य की कमाई। तुमको कोई फिक्र नहीं। इस समय तुम ऐसे कर्म नहीं करते हो जो डर लगे। बाबा को बताते हैं बाबा हमसे बहुत ही भूलें हुई हैं। छी–छी कर्म किये हैं। खून भी किया है। सबसे बड़ा खून है काम कटारी चलाना; परन्तु वह खून भी करते हैं। अभी परमपिता परमात्मा की मत पर चलते हैं तो बहुत ऊँच वरसा मिलता है। फिकरात की बात ही नहीं। फिक्र से फारग स्वामी कींदा सद्गुरु..... कितने समय के लिए? आधा कल्प लिए। इसमें तो मुँझने की बात ही नहीं। तुम बाप के बनते हो तो बाप ही शिक्षा देते हो। बच्चे जानते हैं पढ़ाई के बाद में हम जावेंगे नई दुनिया में। यह किसकी बुद्धि में नहीं होगा हम पढ़ने जाते हैं। सद्गुरु के संग में जाते हैं। सत्य है एक। बाकी सभी है झूठ। सत्य बाबा के हम बच्चे ठहरे। और

बाबा हमको रास्ता बताते हैं। जो हम उनके साथ जावेंगे। तुम संग(म) पर खड़े हो। दोनों को देखो। कहाँ जाना है। नर्क में या स्वर्ग। इसमें मुँझने की तो बात ही नहीं। बाबा टाइम देते हैं कोई भी बात में मुँझते हो तो बोलो। दो बाप से वरसा मिलना है। इनसे नहीं मिलता। इनके द्वारा मिलता है बाप का वरसा। ब्रह्मा के तन में आना पड़ता है। पढ़ने से ही वरसा मिलता है। तो इसमें कोई भी प्रकार का संशय नहीं उठ सकता। सिर्फ माया तुमको याद करने नहीं देती है। माया में भी ताकत कम नहीं है। बहुत लालच देती है। जैसे कुमारी को लालच होती है ससुर घर महल मिलेंगे, जेवर पहनेंगे। बहुत कशिश होती हैं। बाप खुद कहते हैं माया बड़ी जबरदस्त है। बाप भी ऑलमाइटी अथॉरिटी है ना। बाप कहते हैं माया को भी कम नहीं समझना। आधा कल्प है सुख बाप का वरसा। आधा कल्प हे दुख रावण का वरसा। बाप कहते हैं मैं बच्चों को दुख कैसे दूँगा। भगवान अपने बच्चों को दुख कैसे देंगे। बाबा समझाते हैं दुख तुमको 5 विकार देते हैं। अभी तुम बच्चों को पता पड़ा है हमको ड्रामा के प्लैन अनुसार अभी पुरानी दुनिया को छोड़ना है। घर जा फिर नई दुनिया में आना है। सतोप्रधान बनने में टाइम लगता है। युद्ध चलती है। एक है कौरव सेना दूसरी है पाण्डव सेना। यह जो आत्मा है यह गाइड है। हरेक को रास्ता बताते हैं। तुम हो रूहानी गाइड्स। तुम रूहानी बाप के घर का रास्ता बताते हो। तो यह सभी याद रखना है। कृष्ण की आत्मा भी जब पतित बनती है तब मैं उनकी वानप्रस्थ अवस्था में प्रवेश करता हूँ। तुम भी समझते हो भगवान हमको पढ़ाते हैं। मनुष्य नहीं पढ़ा सकते। देवता भी नहीं पढ़ा सकते। तुम जानते हो हमारे मुख में गोल्डेन स्पून होगा। अभी निश्चय नहीं होता है थोड़ा आगे चल आवेंगे जरूर। तुम एक तो धैर्य रखो। तुम सभी दुखों से छूटने वाले हो। बाकी थोड़ा समय है। यह बच्चे जानते हैं हम सभी दुखों से छूटने जाते हैं। बाप धैर्य देते हैं। बच्चों को पढ़ाई में खुशी भी बहुत होनी चाहिए। ऐसे न हो यह पढ़ाई छोड़ फिर उसमें लग जाओ। ऐसे भी बहुत चले गये। कुसंग में चले गये। अभी बहुत साहूकारी में खुश हैं। बचपन जैसे भूल गया। डायवोर्स दे दिया। बच्चे फारकती देते हैं। लिखा हुआ है आश्चर्यवत सुनन्ति..... हाय माया मुझे भी छोड़... यह खेल है। ऐसे नहीं कि भगवान को क्या पड़ी थी क्यों रचा। अरे यह तो अनादि खेल है। क्यों रचा यह प्रश्न करना भी मूर्खता है। मनुष्य जो

भी बातें करते हैं सभी अनर्थ। बाप जो समझाते हैं उनमें अर्थ भरा हुआ है। बाकी यह भूकम्प आदि तो होते रहते हैं। बड़ी भारी भूकम्प होगी। सभी खत्म हो जावेंगे। बाकी थोड़ा तुम्हारा टुकड़ा रहे फिर झाड़ वृद्धि को पाये कितना हो जाता है। बाप कहते हैं तुम पूज्य थे। फिर पुजारी बने। अभी फिर पूज्य बन रहे हो। यह बातें बाप ही समझाते हैं। कितनी बड़ी नॉलेज है। सभी एक समान धारणा नहीं कर सकते। अगर ..... तो बहुत पुरुषार्थ करते। संशय उठाते हैं तो समझो पूरी भक्ति नहीं की है। पूरी भक्ति की होगी तो संशय नहीं उठावेंगे। बच्चों की बुद्धि में है ना। बाबा और निवास स्थान। ब्रह्मा कोई बाप नहीं। सन्यासी ब्रह्मज्ञानी हैं। ब्रह्म को तत्व कहते हैं जिसमें आत्माएँ रहती हैं। उनको कहते हैं ब्रह्माण्ड। बाप समझाते हैं मैं ब्रह्म नहीं हूँ। ब्रह्म तो रहने का स्थान है। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।